#प्रार्थना

#शुद्ध_उच्चारण_एवम्_भावार्थ

किसी भी प्रार्थना व वन्दना के प्रत्येक शब्द उनके अर्थ , भावार्थ ,उच्चारण का योग्य ज्ञान जब तक सम्बन्धित व्यक्ति को नहीं होगा।
तब तक प्रार्थना व वन्दना का सही भाव उसमें नहीं जागेगा। एक एक शब्द व उनमें निहित भावार्थ का ज्ञान योग्य प्रकार से कराना तथा शब्दों का लेखन शुद्ध कराना ।हलन्त , विसर्ग , अनुस्वार की जानकारी के अनुसार उच्चारण का ध्यान अवश्य रखना चाहिए।

प्रार्थना में 3 श्लोक तथा 'भारत माता की जय ' ,मिलकर 13 पंक्तिया हैं।
दोहराते समय पंक्तियों की संख्या 21 हैं।

#प्रथम_श्लोक :--प्रथम श्लोक को स्वयंसेवक एक वचन में बोलता है , वह इस श्लोक में कुछ मांगता नहीं अपितु मातृभूमि के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता है।मातृभूमि को सर्वोच्च स्थान पर रखते हुए इस मातृभूमि की विशेषताओं का स्मरण कर उसके लिए स्वयं को समर्पित करने का संकल्प लेता है।इस श्लोक के माध्यम से वह मातृभूमि (राष्ट्र) के लिए "मातृभूमे , हिन्दुभूमे , महामङ्गले , पुण्यभूमे " विशेषणों का प्रयोग करता है ।

इन सभी के विशेष अर्थ हैं-

"वत्सले मातृभूमे" :- अर्थात् अपने पुत्र पर मातृवत स्नेह करने वाली मातृभूमि ,या पुत्र को सदैव मातृवत स्नेह देने वाली होता है। इस श्लोक में "नमस्ते सदा वत्सले " में सदा का सम्बन्ध नमस्ते के साथ है वत्सले के साथ नहीं, और मातृभूमि का परिचय अनादि काल से ही हिन्दुभूमि के रूप में है , यह समझना चाहिए।

" पतत्वेष कायो " :- मातृभूमि के प्रति अनन्य भक्तिभाव के कारण श्रद्धा पूर्वक समर्पण हेतु यह संकल्प है , जिसे स्वयंसेवक नित्यप्रति दोहराता है।
"मातृभूमि के प्रति मेरा सर्वस्वार्पण हो जाये ऐसी अभिलाषा स्वयंसेवक "पतत्वेष कायो" के रूप में व्यक्त करता है। समर्पण केवल एक वचन में अर्थात् स्वयं का ही होता है। कोई दूसरा बलिदान करेगा तब में करूँगा या हम सब बलिदान करेंगे ऐसा नहीं है।

#द्वितीय_श्लोक :- यह श्लोक उत्तम पुरुष बहुबचन में है। जब हम कोई वस्तु मांगते है तब अकेले के लिए नहीं माँगते है। अतः द्वितीय श्लोक के माध्यम से हम सर्वशक्तिमान ईश्वर को सामूहिक रूप से नमस्कार करते हैं।

"वयं हिन्दुराष्ट्राङ्गभूता " : - यहाँ हम अपना परिचय सामूहिक रूप से हिन्दु राष्ट्र के अभिन्न अङ्ग के रूप में करते है (राष्ट्र से एकात्मता , जो संघ का सिद्धान्त है)

"त्वदीयाय कार्याय ":- यहाँ हम सब मिलकर ईश्वर से निवेदन करते है कि , हे प्रभु ! यह कार्य आपका ही है (संघ कार्य ,ईश्वरीय कार्य) हम सब आपका (ईश्वर का) कार्य करने में समर्थ हो सकें इसलिए आशीर्वाद के रूप में आप (ईश्वर) हम सबको विशेष पाँच गुण प्रदान करने की कृपा करें ऐसा इस श्लोक का भाव जानें।

"मांगे गए पाँच गुण " ---

1.**अजेय शक्ति ---** ऐसी शक्ति जिसको विश्व में कोई जीत न सके ।

2. **सुशील :--** ऐसा श्रेष्ठ शील (चरित्र) माँगा है जिसके समक्ष सम्पूर्ण विश्व नतमस्तक हो जाये।

3. **श्रुतं :--** ऐसा ज्ञान भी माँगा है जो सभी कठिनाईयों तथा समस्याओं में से मार्ग प्रसस्त कर दे,तथा कभी कोई विभ्रम न हो। स्वयं स्वीकृतं कण्टकाकीर्ण मार्गम् :-- स्वयं स्वीकार किया हुआ यह मार्ग सुखमय नहीं है ,अर्थात् कष्टों (चुनौतियों) से भरा यह कार्य हमने अपने मन,बुद्धि व आत्मा से स्वयं स्वीकार किया है।

#तृतीय_श्लोक :--शेष दो गुणों के लिए इस श्लोक में सर्वशक्तिमान ईश्वर से निवेदन करते है।

4. **वीरव्रत :--** समुत्कर्ष निःश्रेयस - इस लोक तथा ऊध्वलोक का उत्कर्ष (वैभव) तथा मोक्ष दोनों वीरव्रती को ही मिलते हैं। ऐसा वीरव्रत भी ईश्वर से माँगा है।(वीरव्रत =विषम परिस्थितियों में भी जो धैर्य रखते हुए अपने लक्ष्य की और अग्रसर रहे वीरव्रती कहलाता है)

समुत्कर्ष निःश्रेयस -ऐहिक एवं पारलौकिक कल्याण।
कणाद मुनि ने धर्म की व्याख्या इस प्रकार की है --- यतोऽभ्यूदय निःश्रेयस् सिद्धि: स धर्म: ।

5. **अक्षय ध्येयनिष्ठा ---** जीवन में ध्येय का स्मरण और उसके प्रति निष्ठा अक्षय बनी रहे अर्थात् जीवन की अन्तिम श्वास तक इस कार्य के प्रति मेरी भावनाएं तथा मेरा समर्पण बाधित या समाप्त न हो । ऐसे आशीर्वाद के रूप में "ध्येय निष्ठा" अन्तिम गुण माँगा है।

#विशेष शब्दों के भावार्थ

संहता कार्यशक्तिर् -- कार्य की पूर्णता संघठित शक्ति के आधार पर करने हैं , अर्थात् सभी कार्य संघठन के द्वारा ही करने हैं।

विधायास्य धर्मस्य संरक्षणम् -- अपने लक्ष्य "धर्म तथा हिन्दुत्व के रक्षण" को धर्म का रक्षण करते हुए प्राप्त करना ।

परं वैभवं नेतुमेतत् स्वराष्ट्रं -- यहाँ हम अपने पवित्र ध्येय का स्मरण करते हैं। परम वैभव का अर्थ है कि सभी प्रकार से हमारे राष्ट्र का उत्कर्ष हो। अपने राष्ट्र के जीवन मूल्यों तथा जीवन उद्देश्यों का सम्मान करते हुए राष्ट्र के परम वैभवशाली स्वरुप को हम प्राप्त करें।

भारत माता की जय -- यह उदघोष (नारा) नहीं अपितु भारत माता की सर्वत्र जय-जयकार करने का दृढ संकल्प हम लेते हैं।

प्रार्थना का श्लोक के अनुसार अनुवाद

''नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमे....'' संस्कृत भाषा के तीन श्लोकों एवं अन्तिम हिन्दी पंक्ति ''भारत माता की जय'' से मिलकर बनी हुई हैं। संघ की दैनिक शाखा एवं विभिन्न कार्यक्रमों में नित्य एवं अनिवार्य रूप से संघ की इस प्रार्थना को बोला व दोहराया जाता हैं। संघ की शाखा में आने वालें अनेक स्वयंसेवकों एवं समाज के अन्य लोग जो संघ में नहीं आते उनको सामान्यतः संस्कृत भाषा का उचित ज्ञान नहीं होता। जिसके फलस्वरूप लोग संघ की प्रार्थना को सुनकर कई बार गलत अर्थ निकाल लेते हैं। वास्तव में संघ की प्रार्थना का भावार्थ बहुत ही उत्तम हैं। अतः प्रयास पूर्वक हम सभी को संघ की प्रार्थना का अर्थ समझना चाहिए ताकि हम अन्य लोगों एवं स्वयंसेवकों को इसके बारे में जानकारी दें सके। प्रार्थना का सही अर्थ समझ कर प्रार्थना बोलने से हमारे मन में भी वेसे ही भावों का निर्माण होगा। जिससे हम उचित प्रकार से अपने दायित्वों की पूर्ति कर सकेगें।

श्लोक - 1
नमस्ते सदा वत्सले.....
अर्थ: हे वत्सल मातृभूमि! मैं तुझे सदैव प्रणाम करता हूँ। हे हिन्दुभूमि! तूने मुझे सुख से बढ़ाया है। हे महामङ्गलमय पुण्यभूमि! तेरे कार्य में मेरी यह काया अर्पण हो। तुझे मैं अनन्त बार प्रणाम करता हूँ।

श्लोक - 2
प्रभो शक्तमन्.....
अर्थ: हे सर्वशक्तिमान् परमेश्वर! हम हिन्दुराष्ट्र के अङ्गभूत घटक, तुझे आदर पूर्वक प्रणाम करते हैं। तेरे ही कार्य के लिए, हम कटिबद्ध हैं। उसकी पूर्ति के लिए, हमें शुभाशीर्वाद दे। विश्व हो अजेय ऐसी शक्ति, सारा जगत् आदर से विनम्र हो ऐसा विशुद्ध शील, तथा हमारे द्वारा बुद्धि पूर्वक स्वीकृत कण्टकमय मार्ग को सुगम करे, ऐसा ज्ञान भी हमें देवें।

श्लोक - 3
समुत्कर्षनिःश्रेयसस्यैकमुग्रं....
अर्थ: अभ्युदय सहित निःश्रेयस की प्राप्ति का वीरव्रत नामक जो एकमेव श्रेष्ठ उग्र साधन है, उसका हम लोगों के अन्तःकरण में स्फुरण हो। हमारे हृदय में अक्षय तथा तीव्र ध्येयनिष्ठा सदैव जाग्रत रहे। तेरे आशीर्वाद से हमारी विजयशालिनी संगठित कार्य शक्ति स्वधर्म का रक्षण कर अपने इस राष्ट्र को परम वैभव की स्थिति पर ले जाने में अतीव समर्थ हो।

विक्रम संवत् 2080
ज्येष्ठ शुक्ल 12 से आषाढ़ शुक्ल 12 तक।
ता. 5 से आषाढ़ मास प्रारम्भ।

श्रीशालिवाहन शाके 1945
राष्ट्रीय ज्येष्ठ 11 से आषाढ़ 9 तक।
ता. 22 से आषाढ़ मास प्रारम्भ।

फसली सन् 1430
प्र. जेठ 27 से प्र. हाड़ 26 तक।
ता. 5 से प्र. हाड़ मास प्रारम्भ।

जून 6 2023 JUNE

इस्लामी हिजरी सन् 1444
जिल्काद 11 से जिलहिज 11 तक।
ता. 20 से जिलहिज माह शुरू।

बंगला संवत् 1430
ज्येष्ठ 17 से आषाढ़ 15 तक।
ता. 16 से आषाढ़ मास प्रारम्भ।

नेपाली संवत् 1143
ज्येष्ठ 18 गते से आषाढ़ 15 गते तक।
ता. 16 से आषाढ़ मास प्रारम्भ।

मूल विचार
ता.3 को ज्येष्ठा रा.शे. 5:4 से ता.5 को मूल रात 3:12 तक।
ता.12 को रेवती सायं 4:39 से ता.14 को अश्विनी दिन 3:10 तक।
ता.21 को श्लेषा रात 11:59 से ता.23 को मघा रा.शे.5:11 तक।

सूर्य नक्षत्र
ता.8 को मृगशिरा रात 10:0 से।
ता.15 को मिथुन राशि रात 1:15 से।
ता.22 को आर्द्रा रात 1:48 से।

पंचक विचार
ता.9 को दिन 9:49 से ता.13 को दिन 3:45 तक।

रवि SUN		ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमा दिन 8:52 तक मृ. 14 कां. 20 **4** पूर्णिमा धनु चं. रा.शे.4:19 से, ज्येष्ठा रा.शे. 4:19 तक	आषाढ़ कृष्ण अष्टमी दिन 3:12 तक मृ. 21 कां. 27 **11** मीन चं. दिन 12:18 से, पू.भा. सायं 5:55 तक	आषाढ़ कृष्ण अमावस्या दिन 8:51 तक मृ. 28 कां. 3 **18** अमावस्या मिथुन चं. मृगशिरा सायं 5:31 तक	आषाढ़ शुक्ल सप्तमी रात 8:32 तक भद्रा मृ. 6 कां. 10 **25** कन्या चं. दिन 2:6 से, पू.फा. प्रा. 7:35 तक
सोम MON		आषाढ़ कृष्ण प्रतिपदा प्रातः 7:16 तक मृ. 15 कां. 21 **5** धनु चं. मूल रात 3:12 तक	आषाढ़ कृष्ण नवमी दिन 1:7 तक भद्रा मृ. 22 कां. 28 **12** मीन चं. उ.भा. सायं 4:39 तक	आषाढ़ शुक्ल प्रतिपदा दिन 9:48 तक मृ. 29 कां. 4 चन्द्रदर्शन **19** पिता दिवस मिथुन चं. आर्द्रा रात 7:19 तक	आषाढ़ शुक्ल अष्टमी रात 9:46 तक भद्रा मृ. 7 कां. 11 **26** कन्या चं. उ.फा. दिन 9:40 तक
मं TUE		आषाढ़ कृष्ण द्वितीया प्रातः 8:20 तक, तृतीया रात 3:10 तक भद्रा मृ. 16 कां. 22 **6** धनु चं. पू.षा. रात 1:50 तक	आषाढ़ कृष्ण दशमी दिन 11:21 तक भद्रा मृ. 23 कां. 29 **13** मेष चं. दिन 3:45 से, रेवती दिन 3:45 तक	आषाढ़ शुक्ल द्वितीया दिन 11:14 तक मृ. 1 कां. 5 **20** रथयात्रा कर्क चं. दिन 2:58 से, पुनर्वसु रात 9:31 तक	आषाढ़ शुक्ल नवमी रात 10:33 तक मृ. 8 कां. 12 **27** तुला चं. रात 11:54 से, हस्त दिन 11:18 तक
बु WED		आषाढ़ कृष्ण चतुर्थी रात 12:49 तक मृ. 17 कां. 23 **7** गणेश चतुर्थी व्रत मकर चं. प्रातः 7:27 से, उ.षा. रात 12:18 तक	आषाढ़ कृष्ण एकादशी दिन 9:55 तक मृ. 24 कां. 30 **14** एकादशी व्रत मेष चं. अश्विनी दिन 3:10 तक	आषाढ़ शुक्ल तृतीया दिन 12:59 तक भद्रा मृ. 2 कां. 6 **21** योग दिवस कर्क चं. पुष्य रात 11:59 तक	आषाढ़ शुक्ल दशमी रात 10:49 तक मृ. 9 कां. 13 **28** तुला चं. चित्रा दिन 12:29 तक
गु THU	ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी दिन 11:9 तक मृ. 11 कां. 17 **1** प्रदोष व्रत तुला चं. स्वाती समस्त	आषाढ़ कृष्ण पंचमी रात 10:22 तक मृ. 18 कां. 24 **8** मकर चं. श्रवण रात 10:40 तक	आषाढ़ कृष्ण द्वादशी दिन 8:54 तक मृ. 25 कां. 31 प्रदोष व्रत **15** मिथुन संक्रान्ति वृष चं. रात 9:6 से, भरणी दिन 3:1 तक	आषाढ़ शुक्ल चतुर्थी दिन 2:58 तक भद्रा मृ. 3 कां. 7 **22** सिंह चं. रात 2:36 से, श्लेषा रात 2:36 तक	आषाढ़ शुक्ल एकादशी रात 10:33 तक भद्रा मृ. 10 कां. 14 एकादशी व्रत **29** बकरीद तुला चं. स्वाती दिन 1:10 तक
शु FRI	ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी दिन 10:51 तक मृ. 12 कां. 18 **2** वृश्चिक चं. रात 11:26 से, स्वाती प्रातः 5:23 तक	आषाढ़ कृष्ण षष्ठी रात 7:54 तक भद्रा मृ. 19 कां. 25 **9** कुम्भ चं. दिन 9:49 से, धनिष्ठा रात 8:58 तक	आषाढ़ कृष्ण त्रयोदशी दिन 8:22 तक भद्रा मृ. 26 कां. 1 **16** वृष चं. कृत्तिका दिन 3:21 तक	आषाढ़ शुक्ल पंचमी सायं 4:59 तक मृ. 4 कां. 8 **23** सिंह चं. मघा रा.शे. 5:11 तक	आषाढ़ शुक्ल द्वादशी रात 9:49 तक मृ. 11 कां. 15 **30** वृश्चिक चं. प्रातः 7:18 से, विशाखा दिन 1:21 तक
श SAT	ज्येष्ठ शुक्ल चतुर्दशी दिन 10:6 तक भद्रा मृ. 13 कां. 19 **3** पूर्णिमा वृश्चिक चं.	आषाढ़ कृष्ण सप्तमी सायं 5:29 तक भद्रा मृ. 20 कां. 26 **10** कुम्भ चं. शतभिषा रात 7:27 तक	आषाढ़ कृष्ण चतुर्दशी दिन 8:21 तक मृ. 27 कां. 2 **17** अमावस्या मिथुन चं. रा.शे. 4:51 से, रोहिणी सायं 4:10 तक	आषाढ़ शुक्ल षष्ठी सायं 6:54 तक मृ. 5 कां. 9 **24** सिंह चं. पू.फा. समस्त	**विवाह मुहूर्त** ता.3,6,7,11,12,13, 22,23,25,26, 27,28,29। आगे हरिशयन दोष है।

तारीख :	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30
सूर्योदय :	5:16	16	16	15	14	14	14	14	14	14	14	13	13	13	13	13	13	13	13	13	13	13	13	13	13	13	13	13	13	13
सूर्यास्त :	6:44	44	44	45	46	46	46	46	46	46	46	47	47	47	47	47	47	47	47	47	47	47	47	47	47	47	47	47	47	47

व्रत-त्यौहार
1.गुरु-प्रदोष व्रत, वट सावित्री व्रतारम्भ-द.भा.।
3.शनि-व्रत की पूर्णिमा, वट सावित्री व्रत-द.भा.।
4.रवि-स्नान-दान की पूर्णिमा, संत कबीरदास जयंती।
7.बुध-सं.गणेश चतुर्थी व्रत चन्द्रोदय रात 10:18।
8.गुरु-मृगशिरा के सूर्य रात 1:0।
11.रवि-शीतलाष्टमी व्रत।
14.बुध-योगिनी एकादशी व्रत सबका, देवरहा बाबा पुण्य तिथि।
15.गुरु-प्रदोष व्रत, मिथुन संक्रांति रात 1:15, राजस संक्रान्ति।
16.शुक्र-मास शिवरात्रि व्रत।
17.शनि-श्राद्ध की अमावस्या।
18.रवि-स्नान-दान की अमावस्या।
19.सोम-मनोरथ द्वितीया-बंगाल, चन्द्रदर्शन, पिता दिवस।
20.मंगल-रथयात्रा, श्रीराम-बलराम रथोत्सव।
21.बुध-योग दिवस।
22.गुरु-वैनायकी गणेश चतुर्थी व्रत, आर्द्रा के सूर्य रात 1:48।
29.गुरु-हरिशयनी एकादशी व्रत, मु.पर्व बकरीद।
30.शुक्र-वामन द्वादशी, चातुर्मास आरम्भ।

विस्तृत पर्व-त्यौहार जयन्ती सितम्बर के पृष्ठ पर देखें

राशि-फल
मेष- व्यवसाय का मार्ग प्रशस्त होगा, विद्यार्थियों की अध्ययन में रुचि होगी।
वृष- नौकरी में सुधार होगा, उलझन तथा मानसिक कष्ट होगा।
मिथुन- वैवाहिक जीवन में मतभेद होगा, नौकरी में पद परिवर्तन सम्भव है।
कर्क- संतान पक्ष से मतभेद सम्भव है। स्त्री के सहयोग से लाभ होगा।
सिंह- स्त्री से भावनात्मक सम्बन्ध रहेगा, संतान की उन्नति होगी।
कन्या- न्यायालयीय कार्य में सफलता मिलेगी, भवन-भूमि का क्रय योग है।
तुला- समाज में यश-प्रतिष्ठा बढ़ेगी, नौकरी वालों के भाग्य में वृद्धि होगी।
वृश्चिक- माता-पिता से सहयोग मिलेगा, प्रेम सम्बन्ध में मतभेद संभव है।
धनु- ऋण व्यवस्था में सुधार होगा, धार्मिक कार्यों में व्यय होगा।
मकर- विद्यार्थियों को अध्ययन क्षेत्र में अथक परिश्रम करना होगा।
कुम्भ- हृदय सम्बन्धी रोग सम्भव है, कार्य क्षेत्र में अस्थिरता रहेगी।
मीन- नौकरी-पेशा वाले को उदासीनता, विद्यार्थियों को अध्ययन में अरुचि।

आकाशी-लक्षण
तेज धूप व गर्मी के बाद कई स्थानों में वर्षा होगी। आसाम, उड़ीसा, आन्ध्रप्रदेश, महाराष्ट्र, पश्चिमी मध्य प्रदेश, दक्षिणी राजस्थान में खण्ड वर्षा के योग हैं।

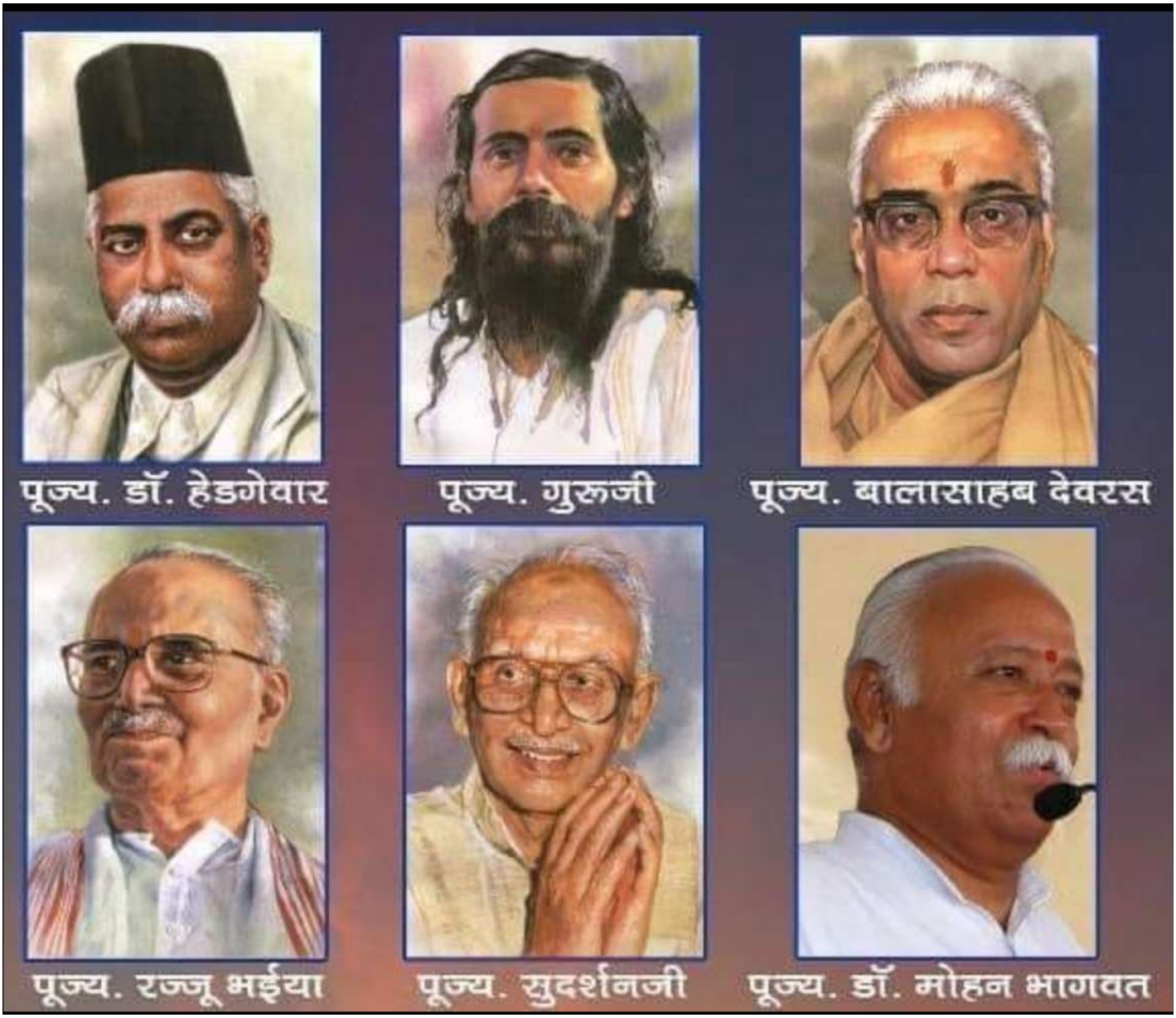
पूज्य. डॉ. हेडगेवार
पूज्य. गुरुजी
पूज्य. बालासाहब देवरस
पूज्य. रज्जू भईया
पूज्य. सुदर्शनजी
पूज्य. डॉ. मोहन भागवत